B.A. Part II, पेपर-II
डॉ० चन्दा कुमारी, गेस्ट टीचर,
हिन्दी विभाग, रोहतास महिला
महाविद्यालय सासाराम

कहानी और उपन्यास में अन्तर

उपन्यास और कहानी दोनों ही कथा-साहित्य की महत्वपूर्ण विधाएँ हैं। दोनों की रचना एक समान है। कथानक, चरित्र, संवाद, वातावरण, भाषा-शैली और उद्देश्य ये सभी तत्व उपन्यास और कहानी में समान रूप से प्रयुक्त होते हैं। दोनों में रचना विधाओं में आकार का अन्तर तो प्रत्यक्ष ही है किन्तु आकार दोनों में अन्तर का एक साधारण पक्ष है। उपन्यास का एक संक्षिप्त अंश कहानी का रूप नहीं ले सकता। इसी प्रकार एक लम्बी कहानी उपन्यास का अंश नहीं बन सकती। दोनों विधाओं के रचना तत्वों में निम्नलिखित अन्तर पाया जाता है:

1. **कथानक** — उपन्यास के कथानक का फलक सम्पूर्ण जीवन होता है, जबकि कहानी का कथानक जीवन के किसी एक पक्ष, दृश्य या घटना पर आधारित होता है। कहानी का कथानक एक ही घटना को सामने रखता है। स्वाभाविक रूप से कहानी के कथानक में उपन्यास जैसी विविधता और व्यापकता नहीं होती है। इसके साथ ही कहानी के कथानक में जो गहराई तथा जो अन्तर्दृष्टि दिखाई पड़ती है वह उपन्यास में सम्भव नहीं है। उपन्यास में जहाँ कथानक क्रमशः विभिन्न सोपानों से गुजरते हुए विकसित होता है, कहानी में इस तरह का विकास सम्भव नहीं है। उपन्यास में नाटकीय स्थितियों का निर्माण करते हुए कथानक पर्याप्त जटिल एवं मिश्रित होता है किन्तु कहानी के कथानक का

Scanned with CamScanner

रोचित विकास अपेक्षित होता है। कहानी में प्रासंगिक कथाओं की जटिल संरचना के लिए अवसर नहीं होता।

2. **चरित्र-चित्रण** :— चरित्र-चित्रण की दृष्टि से उपन्यास और कहानी में मौलिक अन्तर होता है। उपन्यास में चरित्रों की संख्या कहानी की तुलना में ~~बहुत~~ बहुत अधिक होती है। उपन्यास में अनेक प्रकार के प्रतिनिधित्व करने वाले गुण, स्वभाव और प्रकृति तक दूसरे से मिलते-जुलते अथवा प्रतिकूल चरित्रों की योजना सम्भव होती है, वैसी कहानी के लिए सम्भव नहीं है। इसके साथ ही पात्र का सम्पूर्ण जीवन-चरित्र जहाँ उपन्यास में स्थान पाता है तथा उसके चरित्र में उतार-चढ़ाव आदि का चित्र प्रस्तुत किया जाता है वहीं कहानी में चरित्र के एक पक्ष का उद्घाटन होता है इस उतने उतार-चढ़ाव का अवसर नहीं होता। चरित्र में एक सीमित पक्ष को कहानीकार जिस तरह सूक्ष्मता से उद्घाटित कर पाता है, वैसी सूक्ष्मता उपन्यास के चरित्र-चित्रण में नहीं दिखाई पड़ती।

3. **संवाद** :— उपन्यास और कहानी के संवादों में पर्याप्त अन्तर होता है। उपन्यास के संवादों में विविधता दिखाई पड़ती है तथा संवाद-योजना के सभी रूप इसमें उपयोगी होते हैं, किन्तु कहानी के स्वगत कथन, भाषण आदि सीमित होते हैं। कहानी के संवादों में शिथिलता क्षम्य नहीं होती लम्बे संवाद कहानी के लिए उपयुक्त नहीं होते।

Scanned with CamScanner

4. देशकाल एवं वातावरण :— उपन्यास में देशकाल, वातावरण का विस्तृत तथा स्वतन्त्र चित्रण होता है, किन्तु कहानी में यह कथानक के अनिवार्य अंग के रूप में ही सम्भव होता है तथा इसके संक्षिप्त एवं सीमित अवसर होता है। उपन्यास के विस्तृत फलक में विविध एवं विभिन्न स्थानों, कालों तथा वातावरणों के चित्र उपलब्ध होते हैं किन्तु कहानी में देशकाल और स्थान की एकता का निर्वाह सम्भव होता है। इस कारण उसमें वातावरण-चित्रण के अवसर सर्वथा सीमित होते हैं।

5. भाषा-शैली :— भाषा-शैली की दृष्टि से उपन्यास और कहानी में अन्तर स्पष्ट है। उपन्यास में अनेक शैलियों का समन्वय हो सकता है। उपन्यास की शैली कहानी की शैली से इस अर्थ में भिन्न होती है कि उपन्यासकार अपनी रचना में आवश्यकतानुसार स्वयं भी विस्तारपूर्वक बहुत कुछ कह सकता है किन्तु कहानीकार को इसके लिए बहुत सीमित अवसर प्राप्त होता है।

• उद्देश्य :— उद्देश्य की दृष्टि से उपन्यास और कहानी में प्रमुख अन्तर यह होता है कि उपन्यास का उद्देश्य व्यापक तथा बहुमुखी होता है, जबकि कहानी का उद्देश्य निश्चित, सीमित और एकमुखी होता है। उद्देश्य की दृष्टि से उपन्यास और कहानी में वैसा ही अन्तर है जैसा कि महाकाव्य और मुक्तक काव्य में होता है। इन उद्देश्यों की सिद्धि में उपन्यासकार जहाँ स्वतन्त्र भागीदारी कर सकता है वहीं कहानीकार अभीष्ट प्रभाव द्वारा ही ऐसा कर सकता है।